+ नवभारत
भोपाल, रविवार, 2 अगस्त 2026

भारतीय ज्ञान परम्परा और हृदय रोग

ज्योतिषाचार्य
तेजस्कर पाण्डेय

भारत विश्व की उन प्राचीन सभ्यताओं में अग्रणी रहा है, जहाँ स्वास्थ्य को केवल शरीर की कार्यक्षमता तक सीमित नहीं माना गया, बल्कि उसे मन, बुद्धि, आत्मा, प्रकृति और सम्पूर्ण सृष्टि के मध्य स्थापित सामंजस्य का परिणाम समझा गया. भारतीय मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व यह उद्घोष किया था कि मनुष्य स्वयं ब्रह्माण्ड का एक सूक्ष्म प्रतिबिम्ब है. जो शक्तियाँ इस विराट सृष्टि को संचालित करती हैं, उन्हीं का सूक्ष्म प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ता है. यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद, योग, दर्शन और ज्योतिष को कभी पृथक-पृथक विषय नहीं माना गया, बल्कि एक ही समग्र ज्ञानधारा के विविध आयाम समझे गए.

आज जब आधुनिक विज्ञान अत्यन्त तीव्र गति से विकसित हो रहा है, तब यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि क्या हमारी प्राचीन ज्ञान-परम्पराओं में निहित सिद्धान्तों का आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से पुन: परीक्षण किया जा सकता है? क्या हजारों वर्ष पूर्व लिखे गए ग्रन्थों में वर्णित अवधारणाओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन सम्भव है? क्या भारतीय ज्योतिष केवल सांस्कृतिक विश्वास का विषय है अथवा उसमें ऐसे सिद्धान्त भी निहित हैं जिन्हें वैज्ञानिक अनुसंधान की कसौटी पर परखा जा सकता है? इन प्रश्नों ने आज भारतीय विश्वविद्यालयों में एक नए शैक्षिक विमर्श को जन्म दिया है. बीते कुछ वर्षों में देश के अनेक विश्वविद्यालयों ने भारतीय ज्ञान परम्परा पर आधारित शोध को प्रोत्साहन देना आरम्भ किया है. राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भी भारतीय ज्ञान-व्यवस्था को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने पर विशेष बल दिया है. फलस्वरूप संस्कृत, आयुर्वेद, योग, दर्शन तथा ज्योतिष जैसे विषयों में केवल पारम्परिक अध्ययन ही नहीं, बल्कि आधुनिक अनुसंधान-पद्धति के आधार पर नवीन शोध भी किए जा रहे हैं. यह परिवर्तन केवल शिक्षा की दिशा में परिवर्तन नहीं है, बल्कि भारत की बौद्धिक परम्परा के पुनर्जागरण का संकेत भी है.

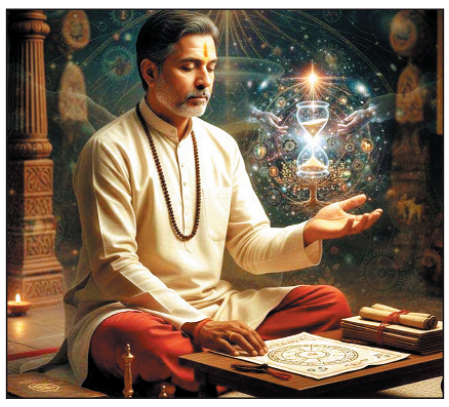

इसी संदर्भ में गुजरात स्थित पारुल विश्वविद्यालय में सम्पन्न एक शोध विशेष रूप से उल्लेखनीय है. रोग निदान एवं विकृति विज्ञान विभाग में सम्पन्न इस शोध का विषय था—ज्योतिषशास्त्र के आधार पर हृदयाघात के विकास का पूर्ववृत्त आधारित अध्ययन. इस अनुसंधान का उद्देश्य यह जानना था कि जिन व्यक्तियों को हृदयाघात हो चुका है, उनके जन्म-विवरणों का अध्ययन करने पर क्या कुछ ऐसे ज्योतिषीय संकेत प्राप्त होते हैं जिनका उल्लेख प्राचीन भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में मिलता है. यह अध्ययन भविष्यवाणी करने के लिए नहीं, बल्कि अतीत की घटनाओं का विश्लेषण करके संभावित समानताओं की खोज करने के उद्देश्य से किया गया.

यही इस शोध की सबसे बड़ी विशेषता है. सामान्यत: समाज में ज्योतिष को भविष्य बताने की विद्या के रूप में देखा जाता है, किन्तु विश्वविद्यालयों में होने वाला अनुसंधान इस दृष्टिकोण से भिन्न होता है. वहाँ किसी भी सिद्धान्त को बिना परीक्षण के स्वीकार नहीं किया जाता. प्रत्येक विचार को प्रमाण, तर्क, सांख्यिकीय परीक्षण तथा अनुसंधान-पद्धति की कसौटी पर परखा जाता है. यदि कोई सिद्धान्त परीक्षण में सफल होता है, तो उसके आगे और अधिक अध्ययन का मार्ग प्रशस्त होता है; यदि नहीं होता, तो उसे संशोधित अथवा अस्वीकार कर दिया जाता है. यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण का मूल आधार है. भारतीय चिकित्सा ग्रन्थों में हृदय को केवल रक्तसंचार करने वाला अंग नहीं माना गया है. चरक संहिता में हृदय को प्राण, चेतना, बुद्धि तथा मन का प्रमुख केन्द्र बताया गया है. सुश्रुत संहिता में भी हृदय की संरचना, उसकी कार्यप्रणाली तथा उससे सम्बन्धित रोगों का विस्तृत वर्णन मिलता है. आयुर्वेद में हृद्रोग के कारणों में अनुचित आहार-विहार, मानसिक तनाव, प्रकृति-विरुद्ध जीवनचर्या तथा दोषों के असन्तुलन को प्रमुख माना गया है. यह दृष्टिकोण आज भी अनेक स्तरों पर आधुनिक चिकित्सा कीजीवनशैली सम्बन्धी अवधारणाओं से साम्य रखता हुआ दिखाई देता है.

दूसरी ओर, वैदिक ज्योतिष के प्राचीन ग्रन्थों में भी हृदय के सम्बन्ध में अनेक संकेत मिलते हैं. सूर्य को शरीर का जीवनदाता, सिंह राशि को वक्षस्थल तथा हृदय का प्रतिनिधि और पंचम भाव को हृदय से सम्बन्धित माना गया है. अनेक आचार्यों ने ग्रहों की विशिष्ट स्थितियों, दृष्टियों तथा दशाओं के आधार पर स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रवृत्तियों का उल्लेख किया है. यहाँ यह समझना आवश्यक है कि इन ग्रन्थों का उद्देश्य रोग का चिकित्सीय निदान प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि मानव जीवन की सम्भावित प्रवृत्तियों का संकेत देना था.

आधुनिक अनुसंधान का महत्त्व इसी तथ्य में निहित है कि वह इन पारम्परिक अवधारणाओं को आधुनिक आँकड़ों के साथ जोड़कर उनकी वस्तुनिष्ठ जाँच करने का प्रयास करता है. यदि किसी शोध में सैकड़ों अथवा हजारों रोगियों के जन्म-विवरणों का विश्लेषण करके कुछ समान ज्योतिषीय संकेत प्राप्त होते हैं, तो वह आगे और विस्तृत अनुसंधान का विषय बन सकता है. यदि ऐसे संकेत नहीं मिलते, तब भी अनुसंधान का महत्त्व कम नहीं होता, क्योंकि विज्ञान का उद्देश्य सत्य की खोज करना है, किसी पूर्वाग्रह को सिद्ध करना नहीं.

आज विश्व के अनेक देशों में चिकित्सा विज्ञान और परम्परागत ज्ञान के बीच संवाद की नई प्रवृत्ति विकसित हो रही है. चीन ने अपनी पारम्परिक चिकित्सा का वैज्ञानिक अध्ययन किया, जापान ने अपनी औषधीय परम्पराओं पर शोध किया, यूरोप में मनोवैज्ञानिक ज्योतिष पर अनेक विश्वविद्यालयों में अध्ययन हुए, और भारत में अब आयुर्वेद तथा ज्योतिष के अन्तर्सम्बन्धों पर व्यवस्थित अनुसंधान प्रारम्भ हो रहे हैं. यह परिवर्तन इस तथ्य का प्रमाण है कि आधुनिक विश्वविद्यालय अब परम्परागत ज्ञान को केवल आस्था का विषय नहीं मानते, बल्कि अनुसंधान योग्य विषय के रूप में भी स्वीकार कर रहे हैं.

आज विश्व में स्वास्थ्य सम्बन्धी दृष्टिकोण भी बदल रहा है. केवल रोग का उपचार पर्याप्त नहीं माना जाता. रोग की रोकथाम, जीवनशैली में सुधार, मानसिक स्वास्थ्य, योग, ध्यान, पोषण, पर्यावरण तथा सामाजिक परिस्थितियों को भी स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण आधार माना जा रहा है. विश्व स्वास्थ्य संगठन भी स्वास्थ्य को केवल रोग की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की अवस्था मानता है. भारतीय ज्ञान परम्परा ने हजारों वर्ष पूर्व इसी समग्र दृष्टि को स्वीकार किया था. इसलिए यह स्वाभाविक है कि आधुनिक अनुसंधान भारतीय परम्पराओं की ओर पुन: ध्यान आकर्षित कर रहा है.

सावन का पहला सोमवार रहेगा बेहद खास

भगवान शिव की आराधना के लिए सावन का महीना बेहद पवित्र माना जाता है. इस पूरे महीने शिव भक्त सोमवार के दिन व्रत रखते हैं और मंदिरों में पहुंचकर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक करते हैं. वर्ष 2026 में सावन का पहला सोमवार 3 अगस्त को पड़ रहा है. इस बार यह सोमवार धार्मिक दृष्टि से विशेष माना जा रहा है, क्योंकि इस दिन उत्तराभाद्रपद नक्षत्र और सुकर्मा योग का संयोग बन रहा है.

ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार सुकर्मा योग में किए गए शुभ कार्यों का सकारात्मक फल प्राप्त होता है. ऐसे में सावन के पहले सोमवार को भगवान शिव की विधि-विधान से पूजा और व्रत करने से मनोकामनाओं की पूर्ति की कामना की जा सकती है.धार्मिक मान्यता है कि सावन सोमवार के दिन भगवान शिव का जलाभिषेक करने से जीवन के कष्ट दूर होते हैं और सुख-समृद्धि का आगमन होता है. इस दिन श्रद्धालु सुबह जल्दी उठकर स्नान करते हैं और साफ वस्त्र धारण करने के बाद व्रत का संकल्प लेते हैं. इसके बाद पूजा स्थल को गंगाजल से शुद्ध कर भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा की जाती है.शिवलिंग पर सबसे पहले शुद्ध जल और गंगाजल अर्पित किया जाता है. इसके बाद पंचामृत से अभिषेक करने की परंपरा है. शिवलिंग पर फूल, बेलपत्र, भांग और अन्य पूजन सामग्री चढ़ाई जाती है. भगवान शिव को फल और मिठाई का भोग लगाया जाता है.

पूजा के दौरान शिव मंत्रों के साथ महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना भी शुभ माना जाता है. माता पार्वती को सुहाग की सामग्री जैसे चुनरी, सिंदूर और मेहंदी अर्पित करने की परंपरा भी कई स्थानों पर है. पूजा के अंत में घी का दीपक जलाकर भगवान शिव की आरती की जाती है.

मान्यता है कि सावन सोमवार के दिन सच्ची श्रद्धा से भगवान शिव की पूजा, जलाभिषेक और व्रत करने से भक्तों को मानसिक शांति मिलती है. हालांकि पूजा के नियम और परंपराएं अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्न हो सकती हैं, इसलिए श्रद्धालु अपनी पारिवारिक और स्थानीय परंपरा के अनुसार पूजा कर सकते है.

संकष्टी चतुर्थी बरसेगी गणपति की कृपा

भगवान गणेश को समर्पित पवित्र संकष्टी चतुर्थी का व्रत 2 अगस्त 2026 को श्रद्धा और आस्था के साथ मनाया जाएगा. हिंदू पंचांग के अनुसार प्रत्येक माह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है. श्रावण मास में आने वाली यह संकष्टी चतुर्थी भक्तों के लिए विशेष धार्मिक महत्व रखती है.

मान्यता है कि इस दिन विधि-विधान से भगवान गणेश की पूजा और व्रत करने से जीवन की परेशानियां दूर होती हैं और सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त होता है. संकष्टी चतुर्थी को विघ्नहर्ता भगवान गणेश की आराधना का विशेष दिन माना जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान गणेश बुद्धि, विवेक, सफलता और शुभ कार्यों के देवता हैं. भक्त इस दिन उपवास रखकर गणपति बप्पा से जीवन में आने वाले संकटों को दूर करने और मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रार्थना करते हैं. इस दिन पूजा करने से मानसिक शांति, सकारात्मक ऊर्जा और आत्मविश्वास बढ़ने की मान्यता है. ज्योतिषीय गणना के अनुसार 2 अगस्त को सूर्योदय सुबह 6 बजकर 1 मिनट पर होगा, जबकि सूर्यास्त शाम 7 बजकर 4 मिनट पर रहेगा. चंद्रमा के उदय का समय रात 9 बजकर 26 मिनट बताया गया है.

व्रत खोलने के लिए चंद्रोदय का विशेष महत्व होता है. संकष्टी चतुर्थी के दिन श्रद्धालु सुबह स्नान कर भगवान गणेश का ध्यान करते हुए व्रत का संकल्प लेते हैं. कई भक्त निर्जला उपवास रखते हैं, जबकि कुछ लोग फलाहार या सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं. शाम के समय भगवान गणेश की विशेष पूजा की जाती है. पूजा में दूर्वा घास, लाल फूल, दीपक, धूप, नैवेद्य और मोदक का भोग लगाया जाता है. इसके साथ ही गणेश मंत्रों का जाप और संकष्टी व्रत कथा का पाठ किया जाता है.

धार्मिक मान्यता के अनुसार चंद्रमा को अर्घ्य देने और पूजा संपन्न करने के बाद ही व्रत खोला जाता है. कहा जाता है कि इस व्रत से भगवान गणेश प्रसन्न होते हैं और भक्तों के जीवन से बाधाओं को दूर कर सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं. संकष्टी चतुर्थी का यह पर्व श्रद्धा, संयम और भक्ति के माध्यम से जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का संदेश देता है.

जानिए एस नाम वालों का कैसा होता है स्वभाव?

नाम का पहला अक्षर व्यक्ति की पहचान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है. ज्योतिष और अंकशास्त्र की मान्यताओं में नाम के शुरुआती अक्षर के आधार पर व्यक्ति के स्वभाव और व्यक्तित्व से जुड़ी कई बातें बताई जाती हैं. इन्हीं मान्यताओं के अनुसार अंग्रेजी के 'S' अक्षर से नाम शुरू होने वाले लोग आमतौर पर मेहनती, आत्मविश्वासी और अपने रिश्तों को लेकर काफी गंभीर माने जाते हैं.

हालांकि व्यक्ति के वास्तविक स्वभाव पर उसके संस्कार, परिस्थितियां, अनुभव और व्यक्तित्व का भी गहरा प्रभाव पड़ता है. इसलिए नाम के अक्षर से जुड़ी इन बातों को सामान्य मान्यता के रूप में ही देखा जाना चाहिए .मान्यता है कि ''एस' नाम वाले लोग अपने लक्ष्य को लेकर काफी गंभीर होते हैं.

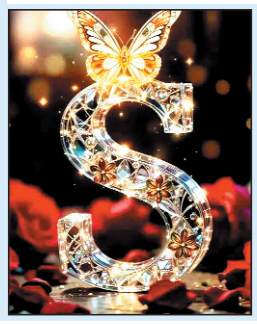

एक बार किसी काम को पूरा करने का मन बना लें तो उसे हासिल करने के लिए लगातार मेहनत करने की कोशिश करते हैं. ये लोग आसानी से हार मानने वालों में नहीं गिने जाते. मुश्किल परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखने और रास्ता निकालने की कोशिश करते हैं.

अपने काम में जिम्मेदारी लेना और उसे पूरा करना इनके व्यक्तित्व की खासियत मानी जाती हैरिश्तों की बात करें तो 'एस' नाम वाले लोगों को भावुक माना जाता है. परिवार और करीबी दोस्तों के लिए इनके मन में गहरा लगाव होता है. हालांकि ये अपनी भावनाएं हर किसी के सामने आसानी से जाहिर नहीं करते. किसी पर भरोसा करने में समय लेते हैं, लेकिन एक बार विश्वास कायम हो जाए तो रिश्ते को पूरी ईमानदारी से निभाने की कोशिश करते हैं. यही वजह है कि दोस्ती और प्रेम संबंधों में इन्हें वफादार माना जाता है.

31 जुलाई से 4 अगस्त तक रहेगा चोर पंचक

ज्योतिषीय मान्यताओं में बड़े लेन-देन और यात्रा में सावधानी की सलाह

ज्योतिष शास्त्र में पंचक की अवधि को कुछ विशेष कार्यों के लिए सावधानी बरतने वाला समय माना गया है. जब पंचक की शुरुआत शुक्रवार से होती है, तो इसे चोर पंचक कहा जाता है. वर्ष 2026 में चोर पंचक का संयोग 31 जुलाई से 4 अगस्त तक रहने वाला है. धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार इस अवधि में धन-संपत्ति, यात्रा और महत्वपूर्ण कार्यों को लेकर विशेष सावधानी बरतनी चाहिए. हालांकि पंचक को लेकर मान्यताएं ज्योतिषीय परंपराओं पर आधारित हैं और इनका वैज्ञानिक आधार नहीं माना जाता है.

पंचक का नाम सप्ताह के जिस दिन से इसकी शुरुआत होती है, उसी के आधार पर तय किया जाता है. शुक्रवार से शुरू होने वाले पंचक को चोर पंचक कहा जाता है. मान्यता है कि इस अवधि में चोरी, सामान खोने, धन हानि या आर्थिक मामलों में परेशानी जैसी स्थितियों से बचने के लिए सतर्क रहना चाहिए. यही वजह है कि कई लोग इस दौरान बड़े वित्तीय फैसले, महत्वपूर्ण लेन-देन और कीमती वस्तुओं से जुड़े काम टालना पसंद करते हैं.प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों में पंचक के दौरान कुछ कार्यों को वर्जित बताया गया है. इनमें लकड़ी इकट्ठा करना, पलंग खरीदना या बनवाना, घर की छत का निर्माण करवाना और दक्षिण दिशा की यात्रा प्रमुख माने जाते हैं. धार्मिक मान्यता है कि पंचक में इन कार्यों को करने से अग्नि भय, चोरी, रोग, राजकीय परेशानी और धन की क्षति जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है.

चोर पंचक के दौरान विशेष रूप से धन से जुड़े मामलों में सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है. बड़ी धनराशि का लेन-देन, सोना-चांदी या महंगे आभूषण खरीदना, नए व्यापार की शुरुआत और कीमती सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने से बचने की मान्यता है. लंबी दूरी की यात्रा को लेकर भी सतर्क रहने की सलाह दी जाती है.

मंगला गौरी व्रत-जानें पूजा का मुहूर्त और व्रत के नियम

सावन का महीना भगवान शिव के साथ माता गौरी की आराधना के लिए भी विशेष माना जाता है. सावन के प्रत्येक मंगलवार को सुहागिन महिलाएं और युवतियां सुखी वैवाहिक जीवन, पति की लंबी उम्र और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना से मंगला गौरी व्रत रखती हैं. वर्ष 2026 में सावन का पहला मंगला गौरी व्रत 4 अगस्त को रखा जाएगा.

इस बार पहला मंगला गौरी व्रत कई मायनों में खास माना जा रहा है, क्योंकि इस दिन सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग और रवि योग का संयोग बन रहा है. धार्मिक मान्यताओं में इन शुभ योगों को पूजा-पाठ और शुभ कार्यों के लिए विशेष फलदायी माना गया है. मंगला गौरी व्रत के दिन माता गौरी के साथ भगवान शिव और भगवान गणेश की पूजा करने की परंपरा है. पंचांग के अनुसार 4 अगस्त को सावन मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि रात 10 बजकर 03 मिनट तक रहेगी. इस दौरान महिलाएं सुबह स्नान आदि से निवृत्त होकर व्रत का संकल्प लेती हैं और विधि-विधान से माता गौरी की पूजा करती हैं. पूजा में माता गौरी को सुहाग की सामग्री, फूल, फल, मिठाई और अन्य पूजन सामग्री अर्पित की जाती है. इसके साथ ही भगवान शिव और गणेश जी की पूजा कर परिवार के सुख-समृद्धि की कामना की जाती है. इस दिन शुभ योगों की बात करें तो सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग और रवि योग रात 9 बजकर 54 मिनट से शुरू होकर अगले दिन सुबह 5 बजकर 45 मिनट तक रहेंगे. वहीं दिन के समय धृति योग सुबह से शाम 7 बजकर 33 मिनट तक रहेगा. इसके बाद शूल योग प्रारंभ होगा. नक्षत्र की बात करें तो सुबह से रात 9 बजकर 54 मिनट तक रेवती नक्षत्र रहेगा और इसके बाद अश्विनी नक्षत्र की शुरुआत होगी.

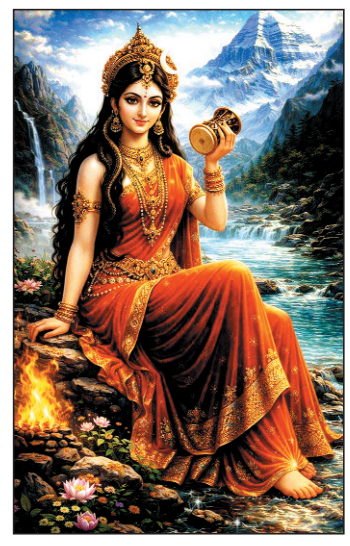

पूजा के लिए दिन में कई शुभ समय बताए गए हैं. ब्रह्म मुहूर्त सुबह 4:20 से 5:02 बजे तक रहेगा. वहीं अभिजीत मुहूर्त दोपहर 12:00 से 12:54 बजे तक रहेगा. सामान्य रूप से पूजा के लिए सुबह 9:06 बजे से दोपहर 2:08 बजे तक का समय उपयुक्त बताया गया है. सूर्यास्त शाम 7:10 बजे होगा.

मंगला गौरी व्रत का महत्व नवविवाहित महिलाओं के लिए और बढ़ जाता है. परंपरा के अनुसार विवाह के बाद पड़ने वाले पहले सावन में नवविवाहित महिला मायके में मंगला गौरी व्रत रखती है. इसके बाद अगले चार वर्षों तक यह व्रत ससुराल में रखने की परंपरा बताई गई है. इस तरह कुल पांच वर्षों तक व्रत करने को शुभ माना जाता है. हालांकि अलग-अलग क्षेत्रों में व्रत की परंपराओं और नियमों में कुछ अंतर हो सकता है. पहले मंगला गौरी व्रत के दिन भद्रा और पंचक का भी संयोग रहेगा.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 02 से 08 अगस्त 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में, मंगल वृषभ राशि में ता. 02 को 9/5 रात से मिथुन राशि में, बुध मिथुन राशि में ता. 05 को 7/6 रात से कर्क राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा कुम्भ मीन मेष और वृषभ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव:-ता. 2 को अश्लेषायां रवि मिथुने भौम के प्रभाव से गुड, खाण्ड, शक्कर, अलसी, रूइ, चांदी, सोना, लोहा, तांबा, ऊन, बिनौला, गेहूं, चांवल, उडद, चना, घी, तेल, सरसों, एरण्ड, मिर्च, मजीठ के भाव में तेजी होगी. ता. 5 को पुष्याम गुरू कर्के बुध के प्रभाव से अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड, खाण्ड, शक्कर, तेज होगें, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मंदे होगें.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	02 अगस्त को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, प्राणनाथ परमधाम बास दिवस,
सोमवार	03 अगस्त को	मौना पंचमीं, नाग मरूस्थले, सावन सोमवार, महाकाल सवारी उज्जैन,
मंगलवार	04 अगस्त को	मंगलागौरी व्रत

मेष

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यों में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

वृषभ

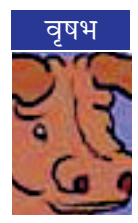

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, कड़ी मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे, परिवार में अविश्वासी लोगों की सलाह से बचें, पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा.

मिथुन

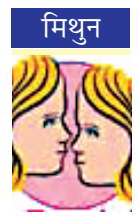

प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत एवं मेहनत आपको भरपूर लाभ देगी, आपकी मनोकामना पूरी होगी, जीवनसाथी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें. दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जमीन जायजाद का बटवारा हो सकता है, अटके कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे. भावनात्मक संबंधों की मजबूती आपको आंतरिक खुशी देगी.

कर्क

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.

सिंह

आपकी महत्वाकांक्षा चरमसीमा पर रहेगी, अनहोनी का भय रहेगा. आप भविष्य की योजना बनायेंगे. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी रखें. रोगी के कार्यो में खर्च होगा. कानूनी मामलों में सफ्लता मिलेगी. पारिवारिक जीवन में वक्त देकर खुशी मिलेगी, दूसरों की सलाह पर ध्यान दें.

कन्या

आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे. आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि, भवन, प्रापर्टी में खर्च होगा. नये कार्यो पर विचार होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

तुला

आपकी जान पहचान और परिचय का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगीं आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

वृश्चिक

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

धनु

इस सप्ताह पुराना अटका धन मिलने के आसार हैं, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे. कई उतार चढ़ाव आयेंगे. व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति मिलेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

मकर

आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते है. जमीन जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा. अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

कुम्भ

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.

मीन

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, साझेदारी में संदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है. सावधानी बांछनीय है, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.